70968_32007_1910051334_(2020-12-17 20:02:14)

TEST CODE: 32007

FIAS – MGP2020 – ESSAY3

ForumIAS

ACADEMY

GENERAL STUDIES

Name Of Candidate	SHRUTI SHARMA		
Email Id.		Roll No.	1910051334
Mobile No.		Date:	17/12/20

Time Allowed: Three Hours

Maximum Marks: 250

INDEX TABLE		
Q. No.	Max. Marks	Marks Obtained
Q.1		
Q.2		
Total Marks:		

Remarks:

INSTRUCTION

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Email, Roll No, Mobile).
2. There are TWO Sections. Each Section has TWO topics printed in English and Hindi. You have to write on 1 topic from Each part.
3. One question in each part is compulsory.
4. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
5. Answers must be written in the medium authorized in the admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided.
6. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
7. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum Answer Booklet must be clearly Struck off.

Start Time| 2:00 pm	**End Time|** 5:00 pm
Mode Of Examination :	**Online** ☑ **Offline** ☐
ECN CODE:	**Evaluation Date:**

Scanned with CamScanner

MARKING SCHEME

Parameter/Criteria	Aspects Considered	Total Marks	Essay 1	Essay 2
Basic Format	Introduction + Conclusion	10		
	Body	15		
Content	Data/Facts/Interpretation/ Analysis	25		
Organisation	Flow of ideas/ Absence of Deviation from the topic	25		
Language Skills	Punctuation/Grammar/ Sentence Formation/Spellings	25		
Examiner's Discretion	Perception/ Innovation/ Engaging	25		

Parameters	Very Good	Good	Average	Poor
Coherence				
Language				
Handwriting				
Pre-writing				

Very Good	Good	Average
120 and above	100-120	Below 100

Scanned with CamScanner

SECTION – A

1. Changing paradigms of federalism in India.
भारत में संघवाद के बदलते प्रतिमान।

2. Has the era of deglobalisation begun?
क्या वि-वैश्वीकरण का युग शुरू हो गया है?

2. क्या वि-वैश्वीकरण का युग शुरु हो गया है?

'यादुम ऊरे, यावुरुम केलीर'
संगम कवि पुनगुंद्रनान का यह कथन भारतीय संस्कृति का वैश्विक दृष्टिकोण उभारने में सहायक है - इसका अर्थ है - 'हम हर स्थान के हैं, हम हर किसी के हैं'

भारतीय संस्कृति के 'वसुधैव कुटुम्बकम' के नजरिए के अतिरिक्त वैश्विक स्तर पर भूमंडलीकरण का पूर्ण रूप से आह्वान द्वितीय विश्व युद्ध के अटलांटिक चार्टर में देखने को मिलता है - जो वैश्विक सहभागिता को केंद्र में रख एक नवीन वैश्विक व्यवस्था की परिकल्पना करता है।

परंतु हाल ही में इस परिकल्पना में अनेक दरारें प्रतीत होती है - जिसे

Visit us : www.forumias.com
Email : student@forumias.academy
Call us: 011-49878625, 9821711605
Blog : blog.forumias.com

Scanned with CamScanner

वि-वैश्वीकरण के युग की शुरुआत के रूप में देखा जा सकता है। एक ओर जहाँ 'वैश्विक नागरिकता' व इंसानियत व ईर के स्थान पर क्षेत्रीय व नृजातीय पहचानों पर ज़ोर दिया जा रहा है, वहीं आर्थिक स्तर पर भी एक 'वैश्विक गाँव' की परिकल्पना को छोटे-छोटे खंडों में तोड़ने का प्रयास दिख रहा है।

परंतु क्या वि-वैश्वीकरण की ताकतें इतनी सर्वव्यापी व गहरी हैं कि इसे एक 'पृथक युग' की उपाधि दी जाए? साथ ही क्या ये महज़ आर्थिक व राजनैतिक स्तर पर देखा जाता है या फिर इसके सामाजिक आयाम भी हैं? अगर ऐसा है तो इस प्रबल ताकत को रोकने के उपाय हैं? इन प्रश्नों की तह में जाने के लिए सर्वप्रथम ~~वैश्विक~~ वि-वैश्वीकरण के विभिन्न आयामों में झाँकने की जरूरत है।

Scanned with CamScanner

अगर राजनैतिक स्तर पर देखा जाए तो संयुक्त राष्ट्र अमरीका के राष्ट्रपति (पूर्व) डोनल्ड ट्रंप इसके अग्रणी प्रवक्ता के रूप में देखे जा सकते हैं - जिन्होंने 'अमरीकियों के लिए अमरीका' का नारा बुलंद किया है।

इसी से जुडता विषय युरोपियाई देशों में भी विद्यमान है - व प्रवासियों के बढ़ते आंकडो के कारण - 'उग्र राष्ट्रवाद' को जन्म दिया है। ब्रिटेन में हाल ही में हुआ 'ब्रेग्जिट' न ही प्रवासियों की रोक-थाम हेतु कदम था परंतु द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत वैश्वीकरण के एक संकेत व केंद्रबिंदु 'यूरोपियन यूनियन' से पृथक हो अपनी एक पृथक पहचान व भविष्य बनाने का प्रयास था।

जहाँ पश्चिमी यूरोपी देशों में प्रवासियों का मुद्दा ज्वलंत है - वहीं पूर्वी यूरोप - एशिया में आरमेनिया - अज़रबैजान में वर्षों पुराना 'नगोर्नो काराबाख' का मुद्दा फिर ज्वलंत हो उठा है। उत्तर -

Call us: 011-49978625, 9821711605
Blog : blog.forumias.com
Visit us : www.forumias.com
Email : student@forumias.academy
Scanned with CamScanner

70968_32007_1910051334_(2020-12-17 20:02:14)

दक्षिण कोरिया से लेकर भारत-पाकिस्तान तक - विश्व भर में बढ़ते संघर्ष व युद्ध वैश्विक अमन की भावना पर कुठाराघात है।

संस्थागत स्तर पर संयुक्त राष्ट्र, वैश्विक व्यवसाय संस्था, वैश्विक स्वास्थ्य संस्था आदि की घटती शक्तियाँ व वर्चस्व वि-वैश्वीकरण का संकेत है। अमेरिका का युनिस्को व WHO से हटना भी इसके संसाधनों व प्रतिष्ठा पर नकारात्मक प्रभाव डालेगा।

आर्थिक स्तर पर भी संयुक्त राष्ट्र अमेरिका ने पहला कदम उठाया है व 'संरक्षकतावाद' का बिगुल बजाया है। अमरीका-चीन का 'शुल्क युद्ध' आर्थिक दायरे में एक 'वैश्विक बाजार' की परिकल्पना पर प्रहार करता है।

भारत के साथ भी अमरीका का रवैया इसी प्रकार है - व H1B वीज़ा कम करने का आदेश अमरीकी कार्यस्थलों व अर्थव्यवस्था में अमरीकी

Visit us : www.forumias.com
Scanned with CamScanner

नागरिकों को रोज़गार देने का प्रयास है। साथ ही भारत को 'जेनरलाइज़्ड सिस्टम ऑफ़ प्रिविलेजिज़' की सूची से भी हटाया गया है।

अमरीका का वि-वैश्वीकरण का नेतृत्व महज़ आर्थिक व राजनैतिक स्तरों तक नहीं बल्कि पर्यावरणीय मामलों में भी हस्तक्षेप करता है। पेरिस समझौते में भारत व अन्य विकासशील देशों के साथ मिलकर जलवायु परिवर्तन व ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के लक्ष्यों को पाने के प्रयास में अमरीका ने मध्य में ही हाथ छोड़ दिए।

पर्यावरण के संदर्भ में सिर्फ़ भौतिक तौर पर नहीं परंतु वैचारिक वि-वैश्वीकरण भी देखने को मिलता है - क्योंकि ये प्रकृति व मानव के परस्पर संबंध को नकारते हुए अपने 'विकास' के मार्ग पर अग्रसर हैं। जर्मनी में बैठे एक व्यक्ति के अत्याधिक ऊर्जा के उपयोग व मालदीव्ज़ व बंग्लादेश में

Call us: 011-49878625, 9821711605
Blog : blog.forumias.com
Visit us : www.forumias.com
Email : student@forumias.academy
Scanned with CamScanner

भूमि विसर्जन के अंतर्संबंध को समझने में हम नाकाम हैं। कोविड जैसी महामारी 'वन हेल्थ' जैसे सिद्धांत को समझने की नाकामी व व्यक्तिगत कार्यों का विश्व पर प्रभाव न समझने के कारण ही जन्म लेते हैं।

पर्यावरण ही नहीं - सामाजिक आंदोलन - जो वैश्वीकरण के कारण एक समूचे रूप में विश्व के पिछड़े वर्गों को जोड़ने में कामयाब हुए थे - आज विखंडित हो रहे हैं। उदाहरण के तौर पर - 'फेमिनिज़्म' आंदोलन में भी अब दरारें पड़ रही हैं - व 'अफ्रीकी फेमिनिज्म' व 'भूरा फेमिनिज़्म' इस आंदोलन में पाश्चिमी व समृद्ध महिलाओं के वर्चस्व को लेकर चिंताए व्यक्त करने लगा है।

उपरोक्त सभी आयामों में वि-वैश्वीकरण का आधार परंतु मूल-रूप से वैचारिक स्वरूप में मिलता है - जिसमें बढ़ती नृजातीय-केंद्रिकता, सांप्रदायिकता व उग्र राष्ट्रवादिता के संकेत मिलते हैं।

Scanned with CamScanner

भारत के परिप्रेक्ष्य में कुछ माँगे मस्तिष्क में आती हैं — विदेशी उत्पादों के खिलाफ़ प्रदर्शन (विशेषकर चीनी उत्पाद) तो दूसरी ओर अंग्रेजी के वर्चस्व के खिलाफ़ विरोध। सिर्फ़ पोशाक व भाषा नहीं, ~~और~~ यह विडंबना नहीं तो और क्या है कि स्वार्थपरायणता का पर्याय बने लोग सोशल मीडिया जैसे वैश्विक नदी रूपी मार्ग में — विदेशी त्योहारों व साहित्य के खिलाफ़ अपनी नौकाएँ चलाते रहते हैं।

इन विभिन्न आयामों का आंकलन करने के उपरांत यह जानना अनिवार्य है - कि वि-वैश्वीकरण के उभरने के पीछे अनेक आशंकाएँ दुरुस्त व वाजिब हैं व अक्सर शक्तिशाली देशों व संस्थाओं के वर्चस्व व दमन से बचने के लिए एक पुकार हैं। परंतु दूसरी ओर - अन्य आयामों में यह स्वार्थपरायणता व संकीर्णता के वाहक हैं।

Scanned with CamScanner

70968_32007_1910051334_(2020-12-17 20:02:14)

महात्मा गाँधी ने कहा है कि हमें सदैव अपने खिड़की-दरवाज़े नए विचारों के लिए खुले रखने चाहिए - क्योंकि यही एक गतिशील समाज का समर्थक है। विश्व में विद्यमान अनेक मुद्दों के निवारण व निराकरण के संदर्भ में यह सीख अत्यंत आवश्यक है।

आर्थिक स्तर पर वैश्विक मुद्दों में सर्वप्रथम 2008 के रिसेशन व 2019-20 के कोविड आर्थिक संकट का स्मरण हो आता है - जिसके समाधान हेतु - वैश्विक संस्थाओं जैसे आई.एम.एफ़ व अंतर-राष्ट्रीय सहयोग की अहम भूमिका थी

आर्थिक ही नहीं बल्कि आतंकवाद जलवायु परिवर्तन आदि मुद्दों पर भी बिना वैश्विक परामर्श के कोई संतोषजनक समाधान नहीं निकल सकता

अतः हमें वैश्वीकरण की ओर अग्रसर होने की आवश्यकता तो है परंतु

Scanned with CamScanner

क्या वैश्वीकरण पूर्ण रूप से विलुप्त हो चुका है ?

सोशल मीडिया से लेकर संचार तक - वैश्वीकरण एक एक ऐसी ताकत है जो जब एक बार 'जीनी के चिराग़' से निकल जाए तो उसे वापस लाना असंभव है। वि-वैश्वीकरण को हवा देते लोग भी वैश्वीकरण द्वारा लाए गए उपकरणों का प्रयोग करने को बाध्य हैं।

कोविड ~~के स~~ महामारी ने भी वि-वैश्वीकरण की ताकतों को जोर दिया है → व अनेक देशों द्वारा 'आत्म निर्भरता' पर जोर दिया गया है। परंतु भारत द्वारा विश्व भर में 'हाइड्रोक्लोरोक्विनोन' की दवाई का वितरण, 'ऑपरेशन संजीवनी' द्वारा हिंदमहासागर के देशों में दवाई व अन्य जरूरतों का वितरण हमारे वैश्विक नजरिए को उजागर करता है। वैश्विक स्वास्थ्य व्यवस्था व वैश्विक खाद्य संस्था का भी ऐसी भुखमरी व बीमारी के परिप्रेक्ष्य में जिम्मेदारी बढ़ जाती है।

Scanned with CamScanner

(Don't Write anything in th

राजनैतिक तौर पर भी अंतर-राष्ट्रीय सहायता के नमूने मिलते हैं - व संयुक्त राष्ट्र का मंच लोगों ~~को व~~ के बीच अंतर्संबंध को जोड़ने में सहायक है।

अतः वैश्वीकरण का ढांचा अभी भी बरकरार है - परंतु इस ढांचे में वि-वैश्वीकरण की हवाओं का चलन हो चला है। उपरोक्त पृष्ठभूमि में, संयुक्त राष्ट्र अमरीका के वैश्विक नेतृत्व के पद से हटने पर, भारत ~~का~~ की वैश्वीकरण के दूत के रूप में भूमिका अहम हो जाती है।
पूंदगुङ्गनार के संदेश से सीख लेते हुए - ~~हमें क्षेत्रीय व वै~~ ~~(सार्क~~ हमें क्षेत्रीय (एस.सी.ओ, सार्क इत्यादि) व वैश्विक मंचो का उपयोग कर - वसुधैव कुटुम्बकम के संदेश को दूर तक ले जाना चाहिए।

Scanned with CamScanner

deglobal. वि - वैश्वीकरण · Yaadum ooray Yaavarum Kelir?

post WW II → Atlantic Charter

✓ global → द्वंद्व

→ संस्थाएं
UN, WHO,
UNESCO

~~आर्थिक → GSP, WTO~~

- globalis. की जरूरत ↗ मुद्दे → ग्लोबल → env
→ recession
→ COVID.
- इतिहास → China
- अभी भी सब जुड़ा रही है.
↳ social media - भारत की भूमिका
↳ pol instit. - आत्मनिर्भर भारत
- regional + global asso

eco - GSP, WTO, H1B visa
- China - US trade war
- self sufficiency → COVID.

env - paris

pol → nationalism - उग्र
→ प्रवासियों का मुद्दा
→ conflicts - Nagorno.

social + feminism
↳ African, Asian fem.

ideo → अंग्रेजी की वरीयता से परेशानी
→ विदेशी उत्पादों के खिलाफ
→ साहित्य
→ त्योहार

Security
↳ Data protection

quotes
Gandhi
Tagore.

Visit us : www.forumias.com
Email : student@forumias.academy
Call us: 011-49878625, 9821711605
Blog : blog.forumias.com

Scanned with CamScanner

(Don't Write anything in th

1. C
द्व
2. O
cl
म

2.

Feedback

Feedback to be provided in terms of (1) Introduction (2) Sentence Constructions (3) Parapgraph Formation (4) Legibility (5) Deviation from Topic (6) Coverage of dimensions (7) Simplicity / ease of reading

Scanned with CamScanner

SECTION - B

1. Consideration for others is the basis of a good life and good society.
दूसरों के लिए सोचना एक बेहतर जीवन और अच्छे समाज का आधार है।

2. Our greatest ability as humans is not to change the world, but to change ourselves.
मनुष्य के रूप में हमारा सबसे बड़ा सामर्थ्य दुनिया को बदलने में नहीं, बल्कि खुद को बदलने में है।

2. मनुष्य के रूप में हमारा सबसे बड़ा सामर्थ्य दुनिया को बदलने में नहीं, बल्कि खुद को बदलने में है।

भारत के एक सुदूरवादी पहाड़ी इलाके में स्थित जीतन राम मांझी की एक मार्मिक, प्रेरक व अनोखी कहानी है। जिसे हाल ही बड़े पर्दे पर एक चलचित्र में परिवर्तित किया गया है। अपनी पत्नी को समय पर अस्पताल ले जाने में विफल मांझी ने, वर्षों की घोर तपस्या व दृढ़ विश्वास व अथक परिश्रम द्वारा पहाड़ के बीच एक सड़क बनाई। खुद की निराशा को आशा में बदल व स्वयं के व्यक्तित्व में परिवर्तन ला, वह अपने पर्यावरण को बदलने में समर्थ हुआ।

जन प्रचलित कहावत है कि यदि व्यक्ति ने कोई चीज़ ठान ली तो

Visit us : www.forumias.com
Email : student@forumias.academy
Call us: 011-49878628, 9821711605
Blog : blog.forumias.com

Scanned with CamScanner

माचो आधा कार्य हो चुका है। यह आंतरिक बदलाव की शक्ति ही व्यक्ति व मनुष्य की सबसे महत्वपूर्ण ताक़त है, जिसने इसे आदिमकाल से आधुनिक काल तक पहुंचाया है।

मानव के इस सामर्थ्य में प्रकृति का भी अभिन्न अंग है। जिस प्रकार एक मिट्टी का ढेला कुम्हार के पहिये व हाथों के अनुसार स्वयं के स्वरूप को एक घड़े में रूपांतरित कर लेता है, उसी प्रकार आंतरिक बदलाव से ही व्यक्ति विकास व प्रगति के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है

पाषाण युग में आदिमानव पर्यावरण या प्रकृति के वेग बदलने में तो अक्षम था परंतु स्वयं कौशल पा, पत्थर के औज़ार व आग का आविष्कार कर पाया। आगे चलकर अपने हुनर में और पारंगित हो, पहिए का आविष्कार किया गया -

Scanned with CamScanner

जिसपर आधुनिक समाज की नींव रखी गई।

समाज का निर्माण भी क्रमशः समुदाय के आंतरिक पुनर्गठन, आपसी सहमति आदि से किया गया। थॉमस हॉब्ज़ के अनुसार प्रकृति में जीवन कठोर, छोटा व निर्दयी था परंतु राजनैतिक व सामाजिक संस्थाओं का क्रमशः निर्माण किया गया - जिसने आज के लोकतांत्रिक राज्यव्यवस्था को जन्म दिया।

राजनैतिक स्तर पर भारत व विश्व में पंचायतों व विकेंद्रीकरण की प्रक्रियाओं की सफ़लता स्वयं के बदलाव की सफ़लता को रेखांकित करती है। स्वीडन में राष्ट्रीय नियोजन में बदलाव लाए बिना स्थानीय स्तर पर शिक्षा नियोजन सकारात्मक परिणाम लाया है।

पर्यावरण को सदैव स्वयं के हित हेतु बदलाव - विध्वंसक परिणाम लाता रहा है व असंख्यानीय विकास के कारण

Visit us : www.forumias.com
Email : student@forumias.academy
Call us: 011-49878625, 9821711605
Scanned with CamScanner

(Don't Write anything in

विश्व तापमान 1°C औद्योगिक क्रांति के समय से बढ़ चुका है। ऐसे में प्रकृति के साथ बदलने वाले कुछ उदाहरण विकास की दूसरी व्यापक परिभाषा के विकल्प को उठाते हैं। अरुणाचल प्रदेश में इदु मीशमी प्रजाति सदियों से बाघों के साथ समन्वय बनाकर रहती आई है - व बाघ के मरने पर उनको मानव के समान दफ़नाती है — इस कारण प्रकृति-मानव में समन्वय स्थिर है।

पर्यावरणीय सततता व धारणीयता के साथ आर्थिक संधारणीयता भी मानव विकास का सूचक है। बांग्लादेश का ग्रामीण बैंक व केरल का कुटुंबश्री स्वयं सहायता समूह हमें दिखाता है - कि स्वयं संचालित बदलाव हमेशा सकारात्मक बदलाव देता है - क्योंकि हम न तो किसी दूसरे पर आश्रित रहते हैं व साथ ही ~~अपने~~ स्वयं में बदलाव लाना, एक समूची संस्था में बदलाव लाने से अत्यंत सरल है।

Scanned with CamScanner

विज्ञान हमारे समूचे वैश्विक दृष्टिकोण को सूचित करता है। एल्बर्ट आइंस्टीन दुनिया के ढाँचे को तो नहीं बदल सकते थे परंतु उसे देखने ~~की~~ के नज़रिए को तो ज़रूर परिवर्तित कर सकते थे। आइंस्टीन की 'जेनरल थ्योरी ऑफ रेलाटिविटी' इसी प्रयास का परिणाम थी जिसने मानव को विज्ञान के नए युग में आगमन किया।

इन आर्थिक, पर्यावरण संबंधी, वैज्ञानिक आयामों से हटकर अगर हम व्यक्तिगत स्तर पर व्यक्तिगत व वैश्विक बदलाव का आँकलन करें तो अनेक स्तर पर विश्लेषण किया जा सकता है।

सुक्रात के अनुसार ~~मेरे लि~~ सबसे महत्वपूर्ण ज्ञान यह था कि वह अज्ञानी है। अतः व्यक्तिगत स्तर पर आत्मविश्लेषण ही वैश्विक स्तर पर भी बदलाव लाने में सहायक बन सकता है।

Call us: 011-49878625, 9821711605
Blog : blog.forumias.com
Visit us : www.forumias.com
Email : student@forumias.academy

Scanned with CamScanner

70968_32007_1910051334_(2020-12-17 20:02:14)

महात्मा बुद्ध के लिए अंतर्ज्ञान व आत्म बदलाव की लड़ाई ही सबसे अहम लड़ाई है। स्वयं की वासनाओं के ऊपर जीत ही विश्व के ऊपर जीत के समान है। यह आत्मविश्लेषण की शक्ति सिर्फ मानव जात को ही प्राप्त है - व हमें इसका भरपूर प्रयोग करना चाहिए।

दो व्यक्तियों की लड़ाई में दूसरे को बदलने की जगह स्वयं का निरीक्षण ज्यादा ज़रूरी है। शिवाजी की मुघलों के साथ लड़ाई में, आत्म निरीक्षण ने ही उन्हें जीत दिलाई। रालेगण सिद्धी गाँव में चीन की भाँति 'कृत्रिम वर्षा' करने की जगह जल संरक्षक प्रणालियों को अपनाया गया, व व्यावहारिक बदलावों से एक हरे-भरे प्रदेश में परिवर्तित किया गया।

Scanned with CamScanner

देश के स्तर पर - वैश्विक मुद्दों में तब्दीली लाना एक कठिन कार्य है - परंतु स्वयं की ताकत व नीति में बदलाव लाना एक अपेक्षाकृत सरल उपाय। अतः 1962 के युद्धोपरांत चीन से शांति की अपेक्षा करने की जगह भारत ने अपनी सैन्य शक्तियों को आने वाले युद्धों के लिए सुदृढ़ किया।

वैश्विक स्तर पर हिरोशिमा नागासाकी के घातक हमले के बाद - जापान ने वैश्विक स्तर पर अमन की गुहार की तो की परंतु - साथ ही अपने सैन्य-बल का परित्याग कर दिया। एक परमाणु बम मुक्त विश्व के लिए हर देश को दूसरों से पहले खुद के हथियारों का परित्याग करना चाहिए। इस परिप्रेक्ष्य में गाँधी जी के शब्द कानों में गूँजते हैं - "स्वयं वह बदलाव बनो जो तुम विश्व में देखना चाहते हो।"

Scanned with CamScanner

परंतु क्या सिर्फ़ विश्व में बदलाव लाए बिना, स्वयं में बदलाव संभव है ? अगर संभव भी है तो क्या ये वांछित लक्ष्य होगा ?

हमें यह समझने की कोशिश करनी चाहिए कि हर बदलाव की एक पृष्ठभूमि होती है। जाति प्रथा के चरम पर - एक दलित व एक ब्राह्मण लड़की की ~~साथ~~ शादी, अविचारनीय थी। अतः स्वयं के साथ व व्यक्तिगत कृत्यों के समन्वय में समाज ~~व~~ विश्व में बदलाव लाने के लिए कार्यरत रहना चाहिए। एक पुरुष प्रधान समाज का जब तक अंत नहीं हो जाता - तब तक व्यक्तिगत सशक्तिकरण के कृत्य भी अधूरे ही रहेंगे।

अतः स्वयं व सामूहिक - दोनों स्तरों पर बदलावों में परस्पर मेल की आवश्यकता है।

Scanned with CamScanner

बी. आर अंबेडकर इस प्रक्रिया का एक उपयुक्त उदाहरण है। उन्होंने स्वयं को शिक्षित व जागरुक कर स्वयं में बदलाव की पहल की। उसके उपरांत उस शिक्षा की नींव पर पैर रख भारत मे एक दलित आंदोलन व जागरूकता का निर्माण किया। भारत जैसे विविध देश के संविधान के मुख्य निर्माता का पद - व्यक्तिगत व वैश्विक बदलाव के परस्पर मेल को उजागर करता है।

इसी भाँति गाँधी जी के लिए भी वैश्विक बदलाव व सत्ता परिवर्तन का रास्ता भी आंतरिक परिवर्तन व 'स्व-राज्य' के मार्ग से होकर जाता था। 'अपरिग्रह' के सिद्धांत को अपने जीवन में अपना, सत्य के हर आयाम को अपने जीवन में कार्यान्वित कर ही, गाँधी जी

Call us: 011-49878625, 9821711605
Blog : blog.forumias.com
Visit us : www.forumias.com
Email : student@forumias.academy

Scanned with CamScanner

मानते थे - कि हम उस नैतिक उत्कृष्ठता की सीढ़ी पर पहुँचते है कि दूसरों से कुछ माँग का पाए।

आधुनिक समाज में भी ऐसे उदाहरण देखने को मिलते है। विद्यालय जाने वाली बालिका ग्रेटा थनबर्ग ने एक छोटे आंदोलन से पूरे विश्व में जलवायु परिवर्तन के खिलाफ़ आंदोलन का बिगुल बजाया है।

मानव के इस आंतरिक व सामाजिक बदलाव के सामर्थ्य को और सुदृढ़ करने में - हमें हर ओर से सीख लेनी चाहिए। हरिवंश राय बच्चन की पंक्तियाँ इस मायने में उपयुक्त है

'नन्ही चींटी जब दाना लेकर चलती है, चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है, गिर कर चढ़ना, चढ़कर गिरना न अखरता है! कोशिश करने वालो की हार नही होती।'

Scanned with CamScanner

अतः स्वयं की इच्छाशक्ति को मजबूत कर मानव को चींटी की भाँति ऊबड़ खाबड़ जमीन पर निरंतर अग्रसर होना चाहिए।

Scanned with CamScanner